

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक

५१६१२५२ (२५२)

ग्रंथ नाम

पं. अभंग.

विषय

मराठी काव्य.

पद
संमर्याकुं कसलो राजा

इक जगती सौ सारि से ठार

क देउनी भेदी नीर सिम

पद
॥ उाई मजमानवर कुवीर ॥



छप मन्दार (2)

सरका जी सरि सा कर्म
वन की चूँ कोई दर की बा
दल छाई हो न य मा मे र
भरा इ हे के र सा वा सी
पी या क प्र वे य क थ
न इ हि उ रा व र के क र

॥ १ ॥ ६

॥ श्री ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ पदचोरा
॥ कर्म ॥ धरिग धरिगयाला
॥ पन्डासिकोठ आता ॥ धन
॥ एक जो पिका अचाट ॥ निद
॥ तद्ये पुनि कवा साटा ॥ रज
॥ निघोरति मीर दाट ॥ जेने
॥ नेत्रिन दिसवाटा ॥ पाहाट वेळ
॥ मेळ उभा पाहुनि नयनो सुड
॥ करि माग पाउलटा कीत ऐकु
॥ निगो पाळ पळती सकळ

(3)

पुढे धननिष्पाहनिचपळंग
तीलकैवैरिधाउनिधरितयेक
लास्यहाते ॥ धन ॥ १ ॥ धसुनिआ
निलाग्नहात ॥ १ ॥ सांगकैसिमा
त ॥ चारुनिदरिदधलासिखात
जातसापळनिवसेमुचिततु
हालागिने ॥ १ ॥ यद्युमात्मा
गिवर्षिता ॥ नेवेदब्रह्मचारी
मुनिजनप्रतीपाळकतुबाळ
क ॥ नंदाचासौख्यदायकप

॥ रिदु ब्रह्म करिसि गड्याः
॥ नीजन ये घेता ॥ २ ॥ बिले
॥ गोपिका समार ॥ ब्रह्म स्वरु
॥ मनुज समार ॥ भाग्य जानु
॥ सेथोर ॥ सगुनि सापडता
॥ चोर ॥ घोर दुष्टा दुष्ट पुपुड
॥ तरली सीव्य पि सी बुद्धि
॥ करुणि धरु मलाडगा
॥ बसली सि ॥ जाडु मला
॥ सोडु निदे ॥ ऐक गापका
॥ ता ॥ ३ ॥ सो डिग सो
॥ डीग मला जाडु उदय

(4)
जाता ॥ ३ ॥ ६ ॥ पदगा-रा
ने ॥ ॥ जसो मती सुनो जीका
॥ नहू की गत मती ॥ जगध्र ॥
अंग जगद्वार मुख चंद्रमण्ड
॥ प्यो है ॥ ऐसै कहे मेरी राधा
सुनो जी ॥ का शकी ॥ १ ॥
॥ रंग रंगो ॥ जगध्र बेली
॥ चंपक सीरी हु तो नवी तोर
॥ डारी जी ॥ २ ॥ बोलत मुरव
॥ सो फुल सरत है ॥ ऐसै

॥ राधा मेरी तेरो कान्हका

॥ रो जी ॥ ३ ॥ कारे भये जब

॥ कारिये नाथा ॥ नीगुण

॥ था जब ये रुप ना था जी ॥

॥ ४ ॥ स्थावर जंगम मुगत

॥ भये है ॥ मेरे सोरे कारे का

॥ न्हवा सो के दिरा धावा

॥ रो जी ॥ ५ ॥ इस कहें क

॥ हुं क्या गत तु न की ॥ भा

॥ व भगत सेवा त क भ

॥ यो जी ॥ कान्ह की ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥

(5) ॥ पद गान्हा ने ॥

॥ सिकविशिकविसिकवि
॥ शिकवी आपुल्या हरी ॥ अ
॥ गवार आपुल्या हरी ॥ वाट
॥ घाट दुस्तार अनिमणुनि
॥ मला अडविहरी तेथेमी
॥ करु कोण पति ॥ सी ॥ ध्रु
॥ पाहुनि कलि पाव करि थ
॥ रि सोडि चना ॥ ये के करी
॥ सोडि तो मिरी ॥ ये क करे
॥ वितो पुरी ॥ ठे उनि घा गर
॥ धर ॥ गो लि मग चपळ म
॥

॥ लनालोपेकदा ॥ बांधी
॥ लडोईसदीस ॥ लोकांदा
॥ सिक ॥ १ ॥ मथुरेचेहा
॥ टाजातावाटधरीगोपाळ
॥ लुसा ॥ मागतसेदीहमज
॥ गो ॥ अनिसुरचुंबनये
॥ मागे ॥ सिं ॥ नारिरिगव्या
॥ माजीहातघालुनिचुंबन
॥ चेतसंये ॥ येनेकेलोबाई
॥ संसारानेये ॥ सि ॥ २ ॥
॥ भयनाहिकाहिअंतरि

(6) ॥ या लाये शो देवाई ॥ भोंदी गो
॥ कीया च्या पोरिंगे ॥ कीति
॥ तरि सांगु गुणगे ॥ प्रेमम
॥ नि आति वाट ते पर तुजन
॥ निरुद्ध मरचि घडे ॥ ये
॥ कांति चे सखे घे निउ
॥ डे ॥ सीव विमो ॥ ३ ॥ ६४
॥ अभंग तुनासांगे ॥ पाई जा
॥ ला असे नारु ॥ त्याला लावी
॥ ला का पुरु ॥ तैरु चिकाचे
॥ काम ॥ अधमा सिं नै चा
॥ राम ॥ १ ॥ आग जाली से

॥ स्वर्जुरी ॥ तिलालाविलीक
॥ सुदुरि ॥ तेथे गंधकाचे काम
॥ अध ॥ २ ॥ दासी दासील
॥ तलासमजावी ॥ चाकरचा
॥ कराचा भार ॥ तेथे नाही म
॥ त्याच काम ॥ ३ ॥ विं
॥ चुचाले मि ॥ तिरि ॥ शस्त्र
॥ स्त्रयावरि कोण धरी ॥
॥ तेथे पैजारीचे काम अ
॥ ॥ धमासी ॥ ४ ॥
॥ सहीत नरका जागा ॥ ५ ॥

॥ हरी कीर्तनी निद्रा करी ॥ त्या
॥ लातु काढो ले मारी ॥ तेथे ना
॥ ही बोधाचे काम अधमा
॥ ५॥ ७॥ ॥ यदगरे नाथाचा ॥
गहो हो रे लाता गुरु जाख
॥ जाला हो या ॥ ७॥ ॥ अंगनि
॥ चेवेलि ॥ ७॥ ॥ कल्प रूप
॥ फूल दुप ॥ ७॥ ॥ रूप सर्व जनी
॥ वनी फणी रायने पाहिला ॥
॥ विसरुनि संसार परी वार

॥ स्तार स्तानिमित्त्य ॥ कं सारी सा
॥ रहदर धरु निभ वविदा
॥ रिला ॥ २ ॥ सतत निजार्ग
॥ भंगन सैमंत चरालिदग
॥ रंगणी श्रि रंग आनुस्मिन्
॥ निदास चरु रंग रंगला ॥ ३ ॥
॥ अभंग ॥ ॥ गंगा गाइले सुग
॥ ३ ॥ त्यासिले सती दुध ॥ १ ॥
॥ हासल त्यासी हा सुधोवा
॥ आपण गात ची असा नो ॥ २ ॥
॥ नामा लजे हासती ॥ पुर्न ज
॥ सहीत नर का जाती ॥ ३ ॥ ॥

(४) ॥पद॥

॥भजभजनगोपालं गोपीगो
मकुलपालं॥भ॥ध्रु॥कर
मधतमुरलीवादनलोतं॥म
॥गमदलीतकभालं॥१॥कं
गढविलंबितनवनमालंगत
नुरुचीविलितमालंगोपी॥भ
॥मनिमयकंदलरुचिरकपो
॥लं॥श्रीधरपालनसीलंगोपी
॥गोकुलपालंभ॥३॥५॥श्री
॥अतिरूपवतीसीताअतिग
॥वैष्णवरावणः॥अतिदानाद

॥ लिबद्धे अति सर्वत्र वर्ज
॥ यत् ॥ १ ॥ पर ॥ ० ॥ म ज पां
॥ दुरंगासरे भवहासरे पुष्पा
॥ श्लोक ॥ नाहिरोगपरीतो
॥ द्रुष्ट आसेतार न्यदेहीव
॥ से ॥ आहिरोगपरीतो
॥ वरि क क आ पुष्प गे
॥ ले न से ॥ आत्मानात्मवि
॥ चार लो वरि क र भावे भ
॥ जा अ च्यु ता ॥ आनीला
॥ ता तीया कुपा सि नै रवे

॥ नेहे तो असे मुखता ॥१॥
॥ सवाई ॥ नव यौवन भोग नि
॥ कमिनि सीम गवदुपनीज
॥ पमाळ धरी ॥ आसिबे
॥ गन हसने जलम गवदुकीध
॥ पुनि नूप करी ॥ नो सागर स्फुर
॥ ये पुनि सव हर देव सादिप
॥ त्ना पुनि ते लहरी ॥ मरना वस
॥ शि नलने लहरी जय राम ह्वय
॥ घर बुड खरी ॥१॥ गवायो जे
॥ वन कामिने संग बंध भये
॥ तव मात धरी हे ॥ आगल गि

॥जबमंदिरमोतबकुपखनेमु
॥ढताहेधरीहे॥लेगयोचो
॥रचुरायसवेधनजागवे
॥लोचनतेकभरीहे॥आ
॥तसमेजयवंतकहेश्वीराम
॥बिनामुरखधुनापरीहे॥१॥
॥बोबी॥जोसर्वकाळमाप्तीय
॥ध्यानी॥अथनीभोजनी॥श
॥यनी॥अंतकाळत्यालागु
॥नी॥मीकायभोगविन॥१॥
॥जरीनकळेमाझेराग॥

॥ जरीकरावे मासे स्मरण ॥ म
॥ गत्वा सीतान ॥ अवस्थ हो
॥ इला ॥ २ ॥ जो मासिये भाते
॥ तत्पर ॥ त्यासि रक्षी मासे
॥ वेध्वर ॥ मितारी भवसागर
॥ ॥ भक्त माझा लोनी ॥ ३ ॥ जो
॥ मासे ना भवि वासला ॥
॥ दुर्बळ अथवा येकला ॥ जो
॥ जरी भवसागर बुडाला ॥
॥ काहाडित मघ होडुनिया ॥
॥ दाहरा ॥ फतरडु बेतरव
॥ ॥ रेय ही जल को सुभावा ॥

॥ जलतु परपाषाणतारेख
॥ हिमालयको समाव ॥ १॥ केव
॥ नतारेदस ॥ १॥ अमंग ॥
॥ आहोदेव आला हातामगना
॥ सयाची चिंता ॥ १॥ त्याचिस
॥ रलीवेरसार ॥ १॥ नातोसुफ
॥ ल्यादे पोर ॥ १॥ आहोलुका
॥ सणे भले त्या यागुणामा
॥ नवले ॥ ३॥ ६४ ॥ पद ॥ माहादे
॥ वमाहादेव माहादेव धनी ॥
॥ असुरदुर्जन जीवनी ॥ ६५ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com